७. शिष्टाचार

– भीष्म साहनी

संभाषणीय

'आपके व्यवहार में शिष्टाचार झलकता है' इस विषय पर चर्चा कीजिए :–

कृति के आवश्यक सोपान :

● विद्यार्थियों से शिष्टाचार संबंधी प्रश्न पूछें ● विद्यार्थी अपने मित्रों के साथ कैसा व्यवहार करते हैं बताने के लिए कहें ● विद्यालय के शिक्षकों से कैसा व्यवहार करते हैं, कहलवाएँ । ● शिष्टाचार से होने वाले लाभ बताने लिए कहें और उनके शिष्टाचार पर चर्चा कराएँ ।

जब तीन दिन की अनथक खोज के बाद बाबू रामगोपाल एक नौकर ढूँढ़कर लाए तो उनकी क्रुद्‌ध श्रीमती और भी बिगड़ उठीं । पलंग पर बैठे-बैठे उन्होंने नौकर को सिर से पाँव तक देखा और देखते ही मुँह फेर दिया ।

''यह बनमानस कहाँ से पकड़ लाए हो ? इससे मैं काम लूँगी या इसे लोगों से छिपाती फिरूँगी ?'' इसका उत्तर बाबू रामगोपाल ने दिया ।

''जानती हो, तलब क्या होगी ? केवल बारह रुपए । .... सस्ता नौकर तुम्हें आजकल कहाँ मिलेगा ?''

''तो काम भी वैसा ही करता होगा,'' श्रीमती बोलीं ।

''यह मैं क्या जानूँ ? नया आदमी है, अभी अपने गाँव से आया है ।''

श्रीमती जी की भौंवें चढ़ गईं, ''तो इसे काम करना भी मैं सिखाऊँगी ? अब मुझपर इतनी दया करो, जो किसी दूसरे नौकर की खोज में रहो । जब मिल जाए तो मैं इसे निकाल दूँगी ।''

बाबू रामगोपाल तो यह सुनकर अपने कमरे में चले गए और श्रीमती दहलीज पर खड़े नौकर का कुशल-क्षेम पूछने लगीं । नौकर का नाम हेतू था और शिमला के नजदीक एक गाँव से आया था । चपटी नाक, छोटा माथा, बेतरह से दाँत, मोटे हाथ और छोटा-सा कद, श्रीमती ने गलत नहीं कहा था । नाम-पता पूछ चुकने के बाद श्रीमती अपने दाएँ हाथ की उँगली पिस्तौल की तरह हेतू की छाती पर दागकर बोलीं, ''अब दोनों कान खोलकर सुन लो । जो यहाँ चोरी-चकारी की तो सीधा हवालात में भिजवा दूँगी । जो यहाँ काम करना है तो पाई-पाई का हिसाब ठीक देना होगा ।''

श्रीमती जी का विचार नौकरों के बारे में वही कुछ था, जो अकसर लोगों का है कि सब झूठे, गलीज और लंपट होते हैं । किसी पर विश्वास नहीं किया जा सकता । सभी झूठ बोलते हैं, सभी पैसे काटते हैं और सभी हर वक्त नौकरी की तलाश में रहते हैं, जो मिल जाए तो उसी वक्त घर से बीमारी की चिट्‌ठी मँगव लेते हैं । श्रीमती जी का व्यवहार नौकरों के साथ नौकरों का-सा ही था । यों भी घर में उनकी हुकूमत थी । जब उन्हें पतिदेव पर गुस्सा आता तो अंग्रेजी में बात करतीं और जब नौकर पर गुस्सा आता तो गालियों में बात करतीं । दोनों की लगाम खींचकर रखतीं । उनकी तेज नजर पलंग पर बैठे-बैठे भी नौकर के हर काम की जानकारी रखती कि

परिचय

जन्म : ८ अगस्त १९१५ रावलपिंडी (अविभाजित भारत)
मृत्यु : ११ जुलाई २००३
परिचय : बहुमुखी प्रतिभा के धनी भीष्म साहनी जी ने सामाजिक विषमता, संघर्ष, मानवीय करुणा, मानवीय मूल्य, नैतिकता को अपनी लेखनी का आधार बनाया ।
प्रमुख कृतियाँ : भाग्य-रेखा, पहला पाठ, भटकती राख, निशाचर आदि (कहानी संग्रह), झरोखे, तमस, कुंतो, नीलू नीलिमा नीलोफर आदि (उपन्यास), कबिरा खड़ा बाजार में, माधवी आदि (नाटक), आज के अतीत (आत्मकथा)

गद्‌य संबंधी

चरित्रात्मक कहानी : जीवन की किसी घटना का रोचक, एवं चरित्रपूर्ण वर्णन चरित्रात्मक कहानी होती है ।

'शिष्टाचार' कहानी के माध्यम से साहनी जी ने पति-पत्नी, नौकर-मालिक के संबंध, उनके प्रति दृष्टिकोण, नौकर का अपने मालिक के प्रति कर्तव्यबोध, अनजाने में किए गए कार्य का पश्चात्ताप आदि विविध स्थितियों को बड़े ही मनोरंजक एवं मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया है ।

नौकर ने कितना घी इस्तेमाल किया, कितनी रोटियाँ निगल गया है । अपनी चाय में कितने चम्मच चीनी उड़ेली है । जासूसी नॉवेलों की शिक्षा के फलस्वरूप उन्हें नौकरों की हर क्रिया में षड्यंत्र नजर आता था ।

काम चलने लगा । हेतू अरूप तो था ही, उसपर उजड्ड और गँवार भी निकला । उसके मोटे-मोटे स्थूल हाथों से काँच के गिलास टूटने लगे, परदों पर धब्बे पड़ने लगे और घर का काम अस्त-व्यस्त रहने लगा । श्रीमती दिन में दस-दस बार उसे नौकरी से बरखास्त करतीं । पर तब भी हेतू की पीठ मजबूत थी । दिन कटने लगे और बाबू रामगोपाल की खोज दूसरे नौकर के लिए शिथिल पड़ने लगी । नौकर उजड्ड और अरूप था, पर दिन में केवल दो बार खाता था । उसपर वेतन केवल बारह रुपए । जो किसी चीज का नुकसान करता तो उसकी तनख्वाह कटती थी । दिन बीतने लगे, हेतू के कपड़े मैले होकर जगह-जगह से फटने लगे, मुँह का रंग और गहरा होने लगा और गाँव का भोला धीरे-धीरे एक शहरी नौकर में तब्दील होने लगा । इसी तरह तीन महीने बीत गए ।

पर यहाँ पहुँचकर श्रीमती एक भूल कर गईं । श्रीमान और श्रीमती जी का एक छोटा-सा बालक था, जो अब चार-आठ बरस का हो चला था और प्रथानुसार उसके मुंडन संस्कार के दिन नजदीक आ रहे थे । पूरे घर में बड़े उत्साह और प्यार से मुंडन की तैयारियाँ होने लगीं । बेटे के वात्सल्य ने श्रीमती जी की आँखें आटे, दाल और घी से हटाकर रंग-बिरंगे खिलौनों और कपड़ों की ओर फेर दीं, शामियाने और बाजे का प्रबंध होने लगा । मित्रों-संबंधियों को निमंत्रण-पत्र लिखे जाने लगे और धीरे-धीरे चाबियों का गुच्छा श्रीमती जी के दुपट्टे के छोर से निकलकर नौकर के हाथों में रहने लगा ।

आखिर वह शुभ दिन आ पहुँचा । श्रीमान और श्रीमती के घर के सामने बाजे बजने लगे । मित्र-संबंधी मोटरों व ताँगों पर बच्चे के लिए उपहार ले-लेकर आने लगे । फूलों, फानूसों और मित्र मंडली के हास्य-विनोद से घर का सारा वातावरण जैसे खिल उठा था । श्रीमान और श्रीमती काम में इतने व्यस्त थे कि उन्हें पसीना पोंछने की भी फुरसत नहीं थी ।

ऐन उसी वक्त हेतू कहीं बाहर से लौटा और सीधा श्रीमान के सामने आ खड़ा हुआ ।

''हुजूर, मुझे छुट्टी चाहिए, मुझे घर जाना है ।''

श्रीमान उसी वक्त दरवाजे पर खड़े अतिथियों का स्वागत कर रहे थे, हेतू के इस अनोखे वाक्य पर हैरान हो गए ।

''क्या बात है ?''

''हुजूर, मुझे घर बुलाया है, मुझे आप छुट्टी दे दें ।''

''छुट्टी दे दें । आज के दिन तुम्हें छुट्टी दे दूँ ?'' श्रीमान का क्रोध

सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए ।

(१) गद्यांश में 'हेतू' की बताई गई विशेषताएँ :

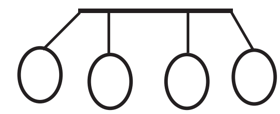

(२) ऐसे प्रश्न तैयार कीजिए जिनके उत्तर निम्न शब्दों हों :

१. बरखास्त २. हेतू

(३) कारण लिखिए ।

१. रामगोपाल जी की नौकरों की खोज शिथिल हुई

२. हेतू की तनख्वाह से कटौती होती ......

(४) 'नौकर और मालिक के बीच सौहार्दपूर्ण व्यवहार होना चाहिए'-स्वमत लिखिए ।

'व्यक्तित्व विकास' संबंधी कोई लेख पढ़िए ।

उबलने लगा, ''जाओ अपना काम देखो। छुट्‌टी-वुट्‌टी नहीं मिल सकती। मेहमान खाना खाने वाले हैं और इसे घर जाना है।'' हेतू फिर भी खड़ा रहा, अपनी जगह से नहीं हिला। श्रीमान झुँझला उठे।

''जाते क्यों नहीं ? छुट्‌टी नहीं मिलेगी।''

फिर भी जब हेतू टस-से-मस न हुआ तो श्रीमान का क्रोध बेकाबू हो गया और उन्होंने छूटते ही हेतू के मुँह पर एक चाँटा दे मारा।

''उल्लू के पट्‌ठे यह वक्त तूने छुट्‌टी माँगने का निकाला है।''

चाँटे की आवाज दूर तक गई। बहुत से मित्र-संबंधियों ने भी सुनी और आँखें उठाकर भी देखा, मगर यह देखकर कि केवल नौकर को चाँटा पड़ा है, आँखें फेर लीं।

श्रीमती को जब इसकी सूचना मिली तो वह जैसे तंद्रा से जागीं। हो न हो, इसमें कोई भेद है। मैं भी कैसी मूर्ख, जो इस लंपट पर विश्वास करती रही और सब ताले खोलकर इसके सामने रख दिए। इसने न मालूम किस-किस चीज पर हाथ साफ किया है, जो आज ही के दिन छुट्‌टी माँगने चला आया है। भागी हुई बाहर आई और बरांडे में खड़ी होकर हेतू को फटकारने लगीं। उन्होंने वह कुछ कहा, जो हेतू के कानों ने पहले कभी नहीं सुना था। कुछ एक संबंधी इकट्‌ठे हो गए और जलसे में विघ्न पड़ता देखकर श्रीमान को समझाने लगे। एक ने हेतू से पूछा, ''क्यों, घर क्यों जाना चाहते हो?''

''क्या काम है ?''

हेतू ने फिर धीरे से कह दिया।

''जी काम है।''

इसपर श्रीमती का गुस्सा और भड़क उठा, मगर बाकी लोग तो बात को निबटाना चाहते थे, हेतू को चुपचाप धकेलकर परे हटा दिया। फिर पति-पत्नी में परामर्श हुआ। दोनों इस नतीजे पर पहुँचे कि इस वक्त चुप हो जाना ही ठीक है। मुंडन के बाद इसका इलाज सोचेंगे। हेतू बजाय इसके कि फिर काम में जुट जाता, बरांडे के एक कोने में जाकर बैठ गया और न हूँ न हाँ, चुपचाप इधर-उधर ताकने लगा। इस पर श्रीमान आपे से बाहर होने लगे। पहले तो देखते रहे, फिर उसके पास जाकर उससे कड़ककर बोले, ''काम करेगा या मैं किसी को बुलाऊँ ?''

हेतू ने फिर वही रट लगाई।

''साहब, मुझे जाने दो, मैं जल्दी लौट आऊँगा, मुझे काम है।''

आखिर जब जलसे में बहुत से लोगों का ध्यान उसी तरफ जाने लगा तो दो-एक मित्रों ने सलाह दी कि उसका नाम-पता लिख लिया जाए, उसकी तनख्वाह रोक ली जाए और उसे जाने दिया जाए। श्रीमान ने अपनी डायरी खोली, उसपर हेतू का पूरा पता लिखा, नीचे अँगूठा लगवाया और धक्के मारकर बाहर निकाल दिया।

श्रवणीय

अपने गाँव/शहर में आए हुए किसी अपरिचित व्यक्ति की मदद के बारे में किसी बुजुर्ग से सुनिए और अपने विचार सुनाइए।

आसपास

बैंक / डाकघर में जाकर वहाँ के कर्मचारी एवं ग्राहकों के बीच होने वाले व्यवहारों का निरीक्षण कीजिए तथा उन व्यवहारों के संबंध में अपनी उचित सहमति या असहमति प्रकट कीजिए।

दूसरे दिन श्रीमती ने अपना ट्रंक खोलकर अपनी चीजों की पड़ताल शुरू की । अपने जेवर, सिल्क के जड़ाऊ सूट, चाँदी के बटन, एक-एक करके जो याद आया, गिन डाला । मगर बड़े घरों में चीजों की सूची कहाँ होती है और एक-एक चीज किसे याद रह सकती है। श्रीमती जल्दी ही थककर बैठ गईं ।

''तुमने उसे जाने क्यों दिया ? कभी कोई नौकरों को यों भी जाने देता है? अब मैं क्या जानूँ क्या-क्या उठा ले गया है ।''

''जाएगा कहाँ ? उसकी तीन महीने की तनख्वाह मेरे पास है ।''

''वाह जी, सौ-पचास की चीज ले गया तो बीस रुपए तनख्वाह की वह चिंता करेगा ?''

''तुम अपनी चीजों को अच्छी तरह देख लो । अगर कोई चीज भी गायब हुई तो मैं पुलिस में इत्तला कर दूँगा । मैंने उसका पता-वता सब लिख लिया है ।''

''तुम समझ बैठे हो कि उसने तुम्हें पता ठीक लिखवाया होगा ?''

दूसरा नौकर आ गया और घर का काम पहले की तरह चलने लगा । जब श्रीमती जी को कोई चीज न मिलती तो वह हेतू को गालियाँ देतीं, पर श्रीमान धीरे-धीरे दिल ही दिल में अफसोस करने लगे । कई बार उनके जी में आया कि उसके पैसे मनीऑर्डर द्‌वारा भेज दें, मगर फिर कुछ श्रीमती के डर से, कुछ अपने संदेह के कारण रुक जाते ।

एक दिन शाम का वक्त था । थके हुए श्रीमान दफ्तर से घर लौट रहे थे, जब उनकी नजर सड़क के पार एक धर्मशाला के सामने खड़े हुए हेतू पर पड़ गई । वही फटे हुए कपड़े वही शिथिल अरूप चेहरा । उन्हें पहचानने में देर नहीं लगी । झट से सड़क पार करके हेतू के सामने जा खड़े हुए और उसे कलाई से पकड़ लिया ।

''अरे तू कहाँ था इतने दिन? गाँव से कब लौटा?''

''अभी-अभी लौटा हूँ साहब ।'' हेतू ने जवाब दिया।

''काम कर आया है अपना ।''

हेतू ने धीरे से कहा -

''जी ।''

''कौन-सा ऐसा जरूरी काम था, जो जलसेवाले दिन भाग गया?'' हेतू चुप रहा ।

''बोलते क्यों नहीं, क्या काम था? मैं कुछ नहीं कहूँगा, सच-सच बता दो ।''

सहसा हेतू की आँखों में आँसू आ गए । होंठ बात करने के लिए खुलते, मगर फिर बंद हो जाते । बार-बार आँसू छिपाने का यत्न करता, मगर आँखें ऐसी छलक आई थीं कि आँसुओं को रोकना असंभव हो गया था ।

बाबू रामगोपाल पसीज उठे ।

https://youtu.be/ei_Ine1o0eA

"अच्छा, क्या बात है ?" उसका कंधा सहलाते हुए बोले ।

"जी मेरा बच्चा मर गया था ।" लड़खड़ाती हुई आवाज में हेतू ने कहा ।

बाबू रामगोपाल को सुनकर दुख हुआ । थोड़ी देर तक चुपचाप खड़े उसके मुँह की ओर देखते हैं, फिर बोले, "मगर तुमने उस वक्त कहा क्यों नहीं ? तुमसे बार-बार पूछा गया, मगर तुम कुछ भी न बोले ?"

"क्यों ?" हेतू ने धीरे से कहा, 'जी वहाँ कैसे कहता ।'

"खुशीवाले घर में यह नहीं कहते । हमारे गाँव में इसे बुरा मानते हैं ।"

और श्रीमान स्तब्ध और हैरान उस उजड्ड गँवार के मुँह की ओर देखने लगे ।

—०—

शब्द संसार

अनथक (वि.) = जो थके नहीं, बिना थके

षड्‌यंत्र (पुं.सं.) = कपटपूर्ण योजना

तब्दील (क्रिया.) = बदल, परिवर्तित

अफसोस (पुं.फा.) = पश्चात्ताप

पसीजना (क्रि.) = पिघलना

मुहावरे

मुँह फेरना = उपेक्षा करना, ध्यान न देना

बरखास्त करना = अपदस्थ करना, निकाल देना

टस-से-मस न होना = दृढ़ रहना, कहने का प्रभाव न पड़ना

बेकाबू होना = अनियंत्रित होना

हाथ साफ करना = चोरी करना, सामान गायब करना ।

पाठ के आँगन में

(१) सूचना के अनुसार कृति पूर्ण कीजिए :-

(क) संजाल -

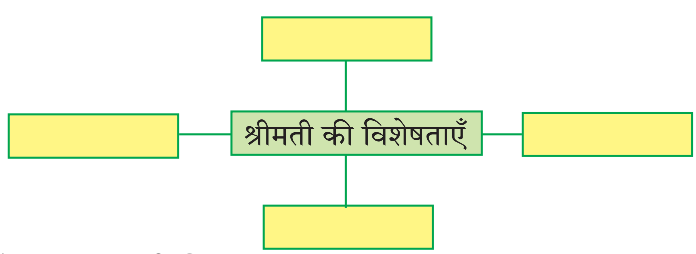

(ख) विधानों के सामने दी हुई चौखट में सत्य/असत्य लिखिए :-

१. अगले दिन श्रीमती ने अपना ट्रंक खोलकर अपनी चीजों की पड़ताल शुरू की । [ ]

२. सहसा हेतू की आँखों में आँसू आ गए । [ ]

(ग) श्रीमती के नौकरों के बारे में विचार -

१. [ ]

२. [ ]

३. [ ]

मौलिक सृजन

निम्नलिखित मुद्दों के उचित क्रम लगाकर उनके आधार पर कहानी लेखन कीजिए :

- मन में निश्चय
- लोगों का जुड़ना
- एक लड़का
- छुट्टियों में गाँव आना
- कुआँ तैयार होना
- लोगों का खुश होना
- सीख, शीर्षक
- कुआँ पानी से भरना
- लोगों का हँसना
- कुआँ खोदने का प्रारंभ
- शहर के महाविद्यालय में पढ़ना
- प्रतिवर्ष सूखे की समस्या का सामना
- एक मित्र का साथ देना

पाठ से आगे

'मानवता ही श्रेष्ठ धर्म है' विचार को अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए ।

भाषा बिंदु

दिए गए अव्यय भेदों के वाक्य पाठ्यपुस्तक से ढूँढ़कर लिखिए :-

8PK1DR

अव्यय

क्रियाविशेषण अव्यय
....
....

समुच्चयबोधक अव्यय
....
....

संबंधबोधक अव्यय
....
....

विस्मयादिबोधक अव्यय
....
....

रचना बोधक

....
....
....